भजन गाने वाले

(5:19, 20)

मुझे कड़ाके की ठण्ड वाली वह रात याद है जब मैं प्राथमिक पाठशाला में पढ़ता था और न्यू मैक्सिको की पहाड़ियों में घर से दूर कैम्प ज़्ल्यू हेवन में हमारा घर था। वहां सूर्य ढलते ही अंधेरा हो जाता था। तंग रास्ते से गुजरते हुए हमने अपनी टॉर्चें जलाई हुई थीं। जंगल से होते हुए हम खुले मैदान में पहुंचते हैं,जहां सलाह देने वालों ने आग जलाई हुई थी। हम सब आग के इर्द-गिर्द बैठकर उसमें से निकलकर आसमान में उड़ती और धुएं में गायब होती चिंगारियों को देख रहे थे। आसमान की ओर देखते हुए मैंने पाया कि एक बार में मैंने पहले इतने तारे कभी नहीं देखे थे और पास से ही एक छोटे झरने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। देवदारु की ताज़गी भरी सुगंधि से हवा महक रही थी और आज भी वह गीत मेरे कानों में गूंजता है, जो हमने उस समय गाया था:

प्रभु महान विचारूं कार्य तेरे,
कितने अद्‌भुत जो तूने बनाए
देखूं तारे, सुनूं गर्जन भयंकर,
सामर्थ तेरी सारे भूमण्डल पर

प्रशंसा होवे प्रभु यीशु की,
कितना महान कितना महान![1]

मुझे आज भी याद है कि उस रात यह गीत गाते हुए ''मुझे बड़ा अच्छा'' लग रहा था। मैं मिडलैंड, टैक्सस से मीलों दूर, उज़री न्यू मैक्सिको के अंधकार भरे पहाड़ी क्षेत्र में अपने बचपन की सब परिचित जगहों से दूर था। फिर भी, मैं जानता था कि मेरे मन में, जिसे मैं सचमुच अपना कह सकता हूं, उसमें उस गीत के गाने में, मुझे बड़ा अच्छा लगा था।

मेरी बेटी साराह भी दूसरी टीन-एज नवयुवतियों जैसी ही है। घर से निकलने से पहले सुबह उसके लिए अपने आप को संवारने का संस्कार पूरा करना आवश्यक है। एक दिन सुबह जब मैं नाश्ता कर रहा था, तो साराह अपने बाल बना रही थी। उसके हेयर ड्रायर का शोर आ रहा था, परन्तु एक आवाज़ ऐसी थी, जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया और मैं केवल उसे ही सुनने लगा था। यह आवाज़ बड़ी स्पष्ट थी क्योंकि यह परमेश्वर के लिए खुला हृदय था। मेरी बेटी गा रही थी, ''यीशु, तू परमेश्वर का मेमना है। तू धन्य है।''

मैंने अपनी बेटी को गाते हुए सुना और विचार किया, ''यह तो बड़ा अच्छा लगता है।'' मुझे अच्छा इसलिए नहीं लगा कि मैं रसोई में बैठा हुआ था या पूरा परिवार मेरे साथ था। बल्कि अच्छा तो उस गीत के कारण लगा था जिसका संगीत परमेश्वर के लिए खुले एक हृदय से निकल रहा था।

बहुत पहले की बात है, आधी रात को दो कैदियों को एक ही कोठरी में बंद कर दिया गया। उनके शत्रुओं ने उनके बारे में झूठ बोला और उनकी पिटाई भी की थी। ये लोग भूखे-प्यासे थे। आधी रात हो जाने के बावजूद वे भूख-प्यास से इतने व्याकुल हो गए थे कि उन्हें नींद नहीं आ रही थी। हम इन लोगों के बारे में प्रेरितों के काम में पढ़ते हैं: ''आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे'' (प्रेरितों 16:25)। कष्ट में और अपने आस पास की दयनीय स्थिति के बावजूद वे गा रहे थे। वे परमेश्वर की महिमा कर रहे थे और दूसरे कैदी उनकी सुनकर हैरान थे कि उस अंधेरी जेल में उन्हें ऐसा आनन्द कैसे मिल गया। मैं पौलुस और सीलास के बारे में पढ़कर सोचता हूं, ''उन्हें उस रात बड़ा अच्छा लग रहा था जिस कारण उन्होंने परमेश्वर के लिए गीत गाए।''

परमेश्वर के सामने गाने के लिए प्रसन्न होना परमेश्वर के वचन को पढ़ने का महत्व बताता है: ''दाखरस से मतवाले न बनो, ज़्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ'' (5:18)। जब मसीही लोग परमेश्वर के सामने स्पष्ट होते और उसकी आज्ञा मानते हैं, तो वह हम में पवित्र आत्मा भरता है। उसकी उपस्थिति ही हम में सामर्थ देकर हमें बदल डालती है। पवित्र आत्मा के वास से यही तो होता है।

आत्मा के इस वास का स्पष्ट परिणाम ज़्या होता है? एक स्पष्ट परिणाम हृदय से प्रभु के लिए गाना है। पौलुस ने लिखा है:

> दाखरस से मतवाले न बनो, ज़्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के साज़्हने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो (5:18-20)।

''आत्मा से परिपूर्ण'' होने का अर्थ गीत तैयार करने वाला अर्थात ऐसा व्यज़्ति होना है जो परमेश्वर को भेंट किए गए गीतों में आनन्द महसूस कर सके।

इफिसियों 5:19, 20 गाने के बारे में बात करता है। ध्यान दें कि गाने में आराधना के विषय पर एक सामान्य ढंग से इन आयतों में ज़्या कहा गया है।

गाकर आराधना करना

गाने के द्वारा आराधना करना *आत्मिक* है। यह आराधना परमेश्वर के आत्मा के वास के कारण होती है। यह आराधना परमेश्वर के आत्मा को हमारी आत्माओं को छूने के

कारण होती है। गाने के लिए संगीत के तकनीकी पहलुओं को जानना आवश्यक नहीं है। आत्मिक गीत गाने के लिए संगीत की समझ या धुन में गाने की आवश्यकता भी नहीं होती। गाने में आराधना इसलिए होती है ज़्योंकि परमेश्वर का आत्मा हम में काम कर रहा होता है।

गाने में आराधना *भावनात्मक* भी है। बाइबल हमें अपने मनों में प्रभु के लिए भजन और आत्मिक गीत गाने के लिए कहती है। यदि गाने में हमारी भावनाएं नहीं हैं तो कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है। गाने के द्वारा आराधना में केवल बौद्धिक अनुभव ही नहीं, हमारी भावनाएं भी होती हैं।

गाने में आराधना *आनन्दपूर्ण* है। इफिसियों 5 अध्याय को आनन्द, उल्लास, और जश्न का बोध किए बिना नहीं पढ़ा जा सकता है। भजन संहिता 145:7 कहता है, ''लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे, और तेरे धर्म का जय जयकार करेंगे।''

मसीह में जश्न मनाने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है! उसने यह बात उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में सिखाई। पिता ने बड़े बेटे को समझाया कि खोए हुए पुत्र के घर आने के बाद ऐसा जश्न ज़्यों मनाया गया था: ''पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए ज़्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है'' (लूका 15:31, 32)।

भय योग्य परमेश्वर की उपस्थिति में हमारे जश्न भज़्तिपूर्ण तथा दीनतापूर्वक होने चाहिए। परन्तु भज़्ति की तुलना उत्साह को खत्म करने से नहीं की जानी चाहिए। हमारा परमेश्वर जीवित है! हमारा प्रभु अपनी कलीसिया में वास करता है! पवित्र आत्मा हमारे जीवनों को परिपूर्ण करता है! आनन्दित हों, आनन्दित हों! गाकर आराधना करना आनन्द देने वाला है।

गा के आराधना करना *गूढ़ अर्थ देने* वाला है। इससे परमेश्वर की महिमा होती है। हमारे गीतों से परमेश्वर की महानता पता चलती है। हमारी आत्माएं उसके पवित्र आत्मा तक पहुंचती हैं।

गा के आराधना करना *सज़्मेलन* है। हमें दूसरे मसीहियों के साथ ''आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत'' गाने का सौभाग्य मिला है। गाने से हमें अपने हृदय तथा स्वर दूसरों के साथ मिलाने का अवसर मिलता है। मिलकर गाने पर ऐसी बात होती है,जो अकेला गाने से नहीं होती। सुबह मैं प्रभु के सामने प्रार्थना के समय गाता हूं, परन्तु उस समय मैं अकेला गा रहा होता हूं। मेरे यह गाने से कि ''हे प्रभु, मैं तुझ से प्रेम करता हूं'' परमेश्वर के सामने मेरी अपनी आस्था पता चलती है। जब मैं साथी मसीहियों के साथ मिलकर गाता हूं तो वह गीत एक नया आयाम पाकर इस बात की पुष्टि करता है कि मैं अपने आप से और अपने संसार से बड़े का हिस्सा हूं। मैं मसीही लोगों की उस संगति का हिस्सा हूं जिसका वही विश्वास है जो मेरा है।

अन्त में, गा के आराधना करना *धन्यवाद देना* है। चिड़चिड़ा और नकारात्मक व्यज़्ति गाना नहीं चाहता। जब परमेश्वर का आत्मा हमारे मनों को बदलने के लिए नीचे आता है,

तो परिणाम आनन्द तथा कृतज्ञता के लिए ही होता है।

पौलुस की बातों में हमें गाने में आराधना की शिक्षा मिलती है। उन शब्दों पर विचार करते हुए गाने में अपनी आराधना के बारे में विचार करें। ज़्या ''आत्मिक,'' ''भावनात्मक,'' ''आनन्दपूर्ण,'' ''गूढ़ अर्थ देने वाली'' और ''धन्यवाद'' शब्दों में गाने में आराधना का वर्णन है ? होना चाहिए।

आत्मा से परिपूर्ण हृदय से आराधना

गाने के द्वारा आराधना करने में आत्मा से परिपूर्ण होने पर विशेष परिणामों पर ध्यान दें। *पहले तो, इसका परिणाम दूसरों की सेवा होता है।* आयत 19क कहती है, ''आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो।'' मसीही लोग टापू नहीं हैं। मुझे आपकी आवश्यकता है और आपको मेरी। धन्यवाद गाने में एक दूसरे का साथ देना हमें यही याद दिलाता है कि अपने स्वर एक दूसरे के साथ मिलाकर मैं आपकी सेवा करता हूं और आप मेरी। उन गीतों को गाने में जिनसे आपका विश्वास प्रकट होता है,आपका साथ देकर आप मेरे मन के संदेश को परमेश्वर तक पहुंचाने के लिए मेरा साथ देते हैं। एक दूसरे के लिए ऐसा करना अपने आप को खाली करने अर्थात यीशु के लिए दूसरों की सेवा करने जैसा है।

दूसरा, इसका परिणाम प्रभु यीशु की आराधना होता है। आयत 19ख कहती है, ''अपने-अपने मन में *प्रभु के साज़्हने* गाते और कीर्तन करते रहो।'' हमारे गाने में संतुलन होना आवश्यक है। बहुत बार गीतों के शज़्द और संदेश ऐसे होते हैं, जो हमारे आस पास के लोगों के लिए ही होते हैं।''क्रोधित करने वाली बातें! बेलगाम जीभ से कभी न निकलने दो'' जैसे शज़्द हमारे परमेश्वर के लिए ही नहीं हैं; ये हम एक दूसरे के लिए भी गाते हैं। परमेश्वर हमसे यह करने की अपेक्षा करता है; परन्तु हमें ''मुझे तेरी बड़ी ज़रूरत है'' और ''झुके हुए घुटनों पर'' जैसे गीत भी चाहिए; जिससे हम *प्रभु के लिए* अपने मनों में भजन गाते हैं।

तीसरा, इससे हर बात के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता दिखाई देती है। आयत 20 कहती है, ''सदा सब बातों के लिए ... परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।'' धन्यवाद के बारे में मैज़्स एंडर्स ने लिखा है:

> यदि हमें समझ होती कि अपने दैनिक जीवन में हम कितने भयानक तरीके से तराजू में लटके हुए हैं ... यदि हमें समझ होती कि हम कितनी बड़ी आत्मिक जंग में घिरे हुए हैं ... यदि हमें समझ हो कि मेज़ पर खाना और सिर के ऊपर छत पाकर हम कितने भाग्यशाली हैं ... यदि हम समझ जाएं कि जीवन की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए हम परमेश्वर के अनुग्रह तथा दूसरों की भलाई पर कितना निर्भर हैं ... तो हम कृतज्ञ लोग होंगे। उन बातों के लिए जो हमें नहीं मिलीं, हमारे पास हैं, उसके लिए कृतज्ञ हों।[2]

आप अपने जीवन के सुर के बारे में ज़्या बताएंगे ? आप शिकायत करने वाले हैं या स्तुति गाने वाले ? आराधना की किसी बात के लिए आप शिकायत करेंगे या किसी भाई या

बहन के साथ गीत गाएंगे ? ज़्या आपका मन सुस्त पड़ गया है या प्रभु के लिए गानों से जोश से भरा है।

सारांश

''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।'' आइए हम वे भजन गाएं जो आत्मा से परिपूर्ण मन से निकलते हैं। आइए वे गीत गाएं जिनसे हम एक दूसरे के विश्वास को दिखा सकें। आइए वह सुर गाएं जो हमें परमेश्वर के मन के निकट लाए और हमें वह भावना दे, जिससे हमें अच्छा लगे।

टिप्पणी

[1]कार्ल बॉबर्ग, ''हौ ग्रेट दौ आर्ट,'' अनु. स्टुआर्ट के. हाईन का हिन्दी - अनुवादक। यह उद्धरण एसूयू प्रैस की अनुमति से छापा गया। [2]मैज्स एंडर्स, *द गुड लाइफ: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ़'' वर्ल्ड* (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1993), 167.